IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

स्त्री : आधी आबादी – आधा सच

राधाप्रिया

शोधथी शिक्षा विभाग

दक्षिण बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय गया बिहार

सारांश :

स्त्री , पुरुष और प्रकृति के बीच की वो कड़ी है जहाँ सृजन जीवंत है | वो ना केवल सृष्टी वर्ण समाज की भी आधी हिस्सेदार है | संतुलन समाज का नियम है वैज्ञानिक रूप से भी और दार्शनिक रूप से भी , और इसी संतुलन में स्त्री और पुरुष का सामाजिक , पारिवारिक और धार्मिक संतुलन भी आता है | इस संतुलन में समय समय पर तथाकथित बदलाव भी हुए और स्त्री ने सभी बदलाव अच्छे बुरे प्रभाव भी झेले| अपने आधे वजूद से स्त्री ने हमेशा पुरुष का साथ भी दिया और न जाने कब पुरुष का साथ देते देते उसका अपना वजूद ही स्याह और शून्य होता चला गया| वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक , कई परिवेश बदले , और साथ ही बदली स्त्री की परिभाषायें|

आधुनिक समय में तथाकथित सभ्य समाज नारी के अंग प्रदर्शन और विज्ञापन से उसे केवल भोग्या के रूप में ही प्रस्तुत कर रहा है| जिसकी प्रसंशा नहीं की जा सकती। तब फिर जय शंकर प्रसाद ने नारी तुम केवल श्रद्धा हो कहा, मैथलीशरण गुप्त को अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी ,आँचल में दूध और आँखों में पानीवेदना में जन्म करुणा मिला आवास" और महादेवी वर्मा को " अश्रु चुनता दिवस इसका अश्रु गिनती रातालिखकर चित्रित करना पड़ा। "

शब्दावली : स्त्री परिवेश परिभाषा संतुलन बदलाव धार्मिक सामाजिक

औरतें , आधी आबादी के आधे सच जैसी है , कुछ कह गयी और कुछ अनसुनी कर दी गयी , और कुछ ने तो कभी कुछ कहने की हिम्मत ही नही जुटाई | जिसने कह दिया उसकी सुनी तो नहीं गयी बल्कि समाज के जोर से चुप करा दी गयी , और जिसने समझ लिया की बोलना ही नही वो भी बेजुबान मरी |तालीम ने सोचने और समझने की ताक़त तो दी लेकिन फैसले करने की आज़ादी न तो परिवार ने दी , न समाज ने , और आज़ादी का इस्तेमाल करने के लिए भी हिम्मत चाहिए , और वो घर ने कभी उसकी परवरिश में शामिल ही नही किया |यूँ तो वैदिक काल से ही नारी आधा हिस्सा रही संसार और समाज का , उनका सभी अलग अलग रूपों में जिक्र रहा है |मैत्री और गार्गी जैसे वेदंगानाओ से , बुद्ध की यशोधरा , गौतम ऋषि की अहिल्या , मर्यादापुरुषोत्तम श्री रामचंद्र जी की सीता के रूप तक |

आदिशक्ति के सृजनकर्ता रूप से लेकर , कालरात्रि के संघारक रूप तक नारी आधा हिस्सा होकर भी सम्पूर्ण रही है |लेकिन इस सम्पूर्णता ने सिमटना शुरू क्र दिया , और धीरे धीरे जिक्र का दायरा भी कम होता गया , राजाओं के युद्ध में जाने वक़्त किये गये , राजतिलक में , राजद्रोह के समय साहसिक पूर्ण तरीके से की गयी राजरक्षा में , हुकूमत के कब्जे क अनदेशे होते ही दहकती ज्वाला में दी गयी आहुतियों में |

इस दौरान रानी लक्ष्मीबाई , रजिया सुल्तान , जोधा , पद्मावती जैसी विरंग्नाएं भी हुई जिन्होंने इतिहास भी अपने नाम से लिखें और विरोधियों के तख़्त भी जड़ से हिला दियें |वक़्त की बहती धारों में नारी भी बही | पति के शव पर सती हुयी , नगरवधू भी हुयी और देवदासी भी | अर्धांगिनी तो बनी , हर मामले में लेकिन आधे आधे अंग और आधे आधे मन से , हक तो पुरे का था उसका , और मन भी | चाहतें भी उसकी थी और उमंग भी , लेकिन न तो फैसले करने के हक थे न हिम्मत , क्यूंकि उन्हें तो बचपन से बस इजाजत लेना सिखाया गया था | ये इजाजत भी जरुरी क|रण या किसी दलील पर नही दिए जायेंगे , बल्कि समाज की जरुरत , कमी , पितृसत्ता के नियमावली से तय होंगे ,अफ़सोस तो तब होगा जब ये दलील और कारण लडको पर लागू नहीं होंगे |

दरवाजों के दहलीज के इस पार और दहलीज के उस पार की ज़िन्दगी इतनी भी अलग अलग नहीं है स्त्री के लिए , क्यूंकि ना तो दहलीज के भीतर की छत उसकी अपनी है , और ना ही दहलीज के बाहर का आसमान | गुजरते वक़्त के साथ कानूनीतब्दीलियाँ भी हुई और शैक्षिक जागरूकता भी आई, औरतों ने हक के लिए आवाज़ भी उठाई , तमाम मामलात में उन्होंने ने अपनी हिस्सेदारी बनायीं | शिक्षा और रोज़गार में उन्हें हिस्सेदारी तो मुकरर करके मिली लेकिन उस हिस्सेदारी में हिस्सा बनने का हौसला ना तो माँ ने बेटियों को दी , ना आज़ादी पिता ने |

समाज ने गर्भ जांच और भ्रूण हत्या से औरत के जन्म को भी अपने तरीके से नियंत्रित की| और उसके कारण समाज में असंतुलित लिंगानुपात, देह व्यापार , लड़कियों की खरीद बिक्री , देह व्यापार और गैरकानूनी वेश्यावृति को बढ़ावा मिला | वेश्यालयों में स्त्रियों को पहुंचाने वाले उनके प्रेमी ही रहे हैं(मूलरूप से) और बदनाम स्त्री हुई है अनाथालयों में भी वो ही बच्चे , जिनके स्पर्म डोनर भाग गए, बिना कंडोम वाला सेक्स | फालतू का प्रसवाअहम बात वेश्या के मूल ग्राहक शादीशुदा आदमी यानि पुरुष लोग। शादी का सच। और वेश्या चल के भी नही आती इनके पास यही चल कर जाते फिर कोसते भी। इतना लिखने पर एक लिंग श्रेष्ठ बोल उठा कि कुछ स्त्री अपने महंगे शौक के लिए वेश्या बनती तो लड़के क्यों नहीं अपनाते यह जॉब अच्छे पैसे कम काम | कभी कभी ऐसा भी वक़्त आता है जब समाज औरतों से इंसानियत का रिश्ता भी नही रखता और कई बार ऐसी तारतार होती इंसानियत नज़र आती ह अखबार क पन्नो में , कभी दहेज़ में , घरेलु हिंसा में , आनर किलींग में , काम काजी जगहों पर हुए भेदभाव में और वक़्त बेवक्त किये जा रहे है , मजाक में , तंज में , पहनावे से लेकर उसके हर चुनाव में जो उसने खुद के लिए किया | शादी करने से लेकर , शादी न करने तक , माँ बनने से लेकर माँ न बनने तक , नौकरीशुदा होने से लेकर घरेलु होने तक सबकुछ, हर फैसला कहीं न कहीं कटघरे में है | या कह ले की फैसले लेने की आज़ादी भी कटघेरे में है |

दहलीज के उस पार जाकर वो अपने हिस्से क आसमान में अपनी उड़ान भर सके , और इस पार अपने लिए छत मजबूत कर सके , इसके लिए तमाम तरह के महिला सुरक्षा बिल , महिला आरक्षण के प्रावधान , सामान काम के लिए सामान पे , कार्यालय में सामान अधिकार , सामान सम्मान , सभी तरह की कमिटियों में उनकी अनिवार्य मौजूदगी , लोकसभा से लेकर राज्य सभा तक सत्ता क हर छोटे बड़े गलियारे तक औरत की उपस्तिथि को अनिवार्य किया गया |बदलते समाज में जहाँ एक तबका पढ़ा लिखा , दोनों तबके आपस में एक दुसरे से कंधे से कन्धा मिलकर साथ चल रहे , मंचो पर बराबरी की बात कर रहे और यकिनन कई मोर्चो पर एक साथ काम कर भी रहे हैं लेकिन ये बस गिनती भर के है|

चीजे बदलने की सूरत में है , और प्रक्रिया चल रही है , और बदलाव तो वैसे भी एक धीमे प्रगति है लेकिन ये सब चिंताजनक है जब प्रस्तिथियाँ अब उनके गौण और शून्य होने का इशारा कर रही थी |

कब ये आधी आबादी जिक्र नाम भर और शून्य हो गयी |नारी तो महादेवी वर्मा की कवितायों में भी थी , भिखारी ठाकुर के नाटकों में भी , मुंशी प्रेमचंद के उपन्यासों में भी , छोटे से जिक्र में भी ससक्त ,मजबूत , धुरी जैसी शून्य में सम्पूर्ण चक्र पर मजबूत पकड़ |

विदेशी आक्रमण , मुग़ल शासन, सामंती व्यवस्था और शासकों की विलासिता ने महिलाओ को उपभोग की वास्तु बना दिया | इस कारन बाल विवाह , अशिक्षा ,पर्दाप्रथा, सती प्रथा , आदि सामाजिक कुप्रथाओं का समाज में जन्म हुआ |इसे समाज में महिलाओं की स्तिथिहीन हो गई| मध्यकाल में महिलाओं की स्तिथि और दयनीय हो गई | अशिक्षा , रुढिवादिता और चार दीवारी में कैद हो गई | स्वतंत्रता संग्राम के समय जब विभाजन हुए , तब भी दर्द छलका औरत का लूटी गई , अगवा की गयी , प्रेम में बटी , जात पात के नाम पर , धर्म क नाम पर , पितृसत्ता क आधार पर , वैराग्य , दहेज़ , पुत्र प्रेम , हर बात पर बंटी या यू कहे की बात बात पर कटी| नारी सबला की जगह अबला बन गयी| 19 वी शताब्दी के प्रारंभ में आर्य समाज , ब्रह्म समाज आदि संस्थानों ने स्त्रियों की शिक्षा क लिए प्रयास प्रारंभ किये |समाज सेवको में राजा राममोहन रॉय . स्वामी दयानंद सरस्वती , स्वामी विवेकानंद , ईश्वर चंद विद्यासागर आदि ने मिलकर आवाज़ उठाई| इन्होने तत्कालीन अंग्रेजी शासकों के आगे तमाम सामाजिक कुरूतियों के खिलाफ आवाज़ उठाई| इस प्रकार समाज ने उस समय की सटती प्रथा , बहु विवाह , अशिक्षा आदि से समाज को मुक्त किया जा सका | हलाकि इन सब में दहेज़ प्रथा चलती रही , और आज भी जीवंत है अलग अलग तरीकों से|काननों बने भी और सार्थक भी साबित हुए | कई बार इन कानूनों दुरूपयोग के मामले भी आते है | एक फीसद मामले कई बार सच भी होतें है | किन्तु पितृसत्ता की जड़ो में पुरुष सुरक्षित है नहीं तपो आज़ादी के इतने सालों बाद भी महिला सुरक्षा बिल की जरुरत नही पड़ती|

धर्म और स्त्रिद्वेष:

भारत सदेव से ही एक धर्म प्रधान देश रहा है |विविधताओ से घिरा , अनेक धर्मो को मानाने वालें लोग और उन लोगो की अपनी अपनी परम्पराएं |इन सभी धर्मो में और इनकी परम्पराओं में स्त्री की अपनी भूमिका है |किन्तु हर भूमिका के दायरे को धर्म ने पितृसत्ता से समेट कर रखा है |कई

बार पितृसत्ता धर्म का सहारा लेता है , और धर्म पितृसत्ता का सहारा लेता है स्त्रियों की भूमिका तय करने में |धर्म ने स्त्रियों की सार्गिक रूप में बांध दिया है |जिससे पारंपरिक भूमिका का आधुनिक वहां कई बार मुश्किल और असंतुलित हो जाता है |

स्त्री और बाजारवाद :

वैश्वीकरण के काल में बाज़ारवाद ने सबसे ज्यादा तेजी से आगे आई | मानव जीवन क हर हिस्से को बाजारवाद ने प्रभावित किया है |स्त्री का सामाजिक रूप भी इस बाजारवाद से नहीं बच सका | चाहे वो खूबसूरती के पैमाने हो , उनके घरो में वस्तुस्तिथि और उनमें होतें बदलाव , उन बदलावों की जरुरत को भी बाज़ारवाद ने जाहिर किया| रिश्तों , घर और समाज में बदलती उनकी भूमिका ने उनकी जड़ों को मजबूत किया है | कई बार बढती टहनियों मे जड़ों की मजबूती से ध्यान हट जाता है , तो बस कहीं कहीं हमारी परम्पराएं , पूर्वी और पश्चमी सभ्यता के कहीं बेहतर से बेहतरीन तो कहीं फ्यूज़न बन रही है |

स्त्री और सामाजिक धुरी :

स्त्री अपने जीवनकाल में कई रिश्ते निभाती है | हर रिश्ता बड़ा ही अहम् और पारिवारिक रूप से बहुत जरुरी |माँ , बहन , बेटी , दोस्त , अर्धांगिनी जीवन के अलग अलग पड़ाव पर उनके अलग अलग रूप और हर पड़ाव पर अहम् |ये कहना गलत नही होगा की स्त्री समाज की वो धुरी है जो समाज को सिरे से बाँध कर रखती है |इस धुरी की मजबूती ही समाज का संतुलन है | संतुलन जो समाज के चौतरफा विकास की नीव है |मजबूत नीव ही मजबूत इमारत का विकास क्र सकती है

किस घर की स्त्री :

माता पिता के घर जन्म लेकर बड़े होने और फिर विवाहोपरांत अपने पति के मकान को घर बनाने वाली स्त्री पुरे जीवन भर यहीं तय नहीं कर पाती की उसकी अपनी छत कौन सी है | माँ के घर से पति के घर क रास्तें को तय करते करते उसकी पूरी उम्र गुजर जाती है | और तल्खियों क बीच जब वो कोई फैसला लेने की कोशिश करती है सबसे बड़ी मुस्किल जो पेश आती है वो है छत की | शायद इसलिए कहते है की औरत को बसने क लिए माँ बनना जरुरी है , तभी तो वो माँ का घर होता है | शादी को पढाई से बड़ी जिम्मेदारी समझने वाले माँ पिता , लड़कियों को पुरे उम्र क लिए अपंग बना देते है | और फिर न तो वो बराबरी की शादी क तैयार होती है न ससक्त माँ क लिए | उल्टा गलत फैसलों की ये कड़ी को टूटने में पीढियां लग जाती है |

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. राम, आहुजा (1999)'' भारतोय सामाजिक व्यवस्था'', रावत प्रकाशान, जयपुर, नई दिल्ली

2. सिंह, करण बहादुर, (2006) ''महिला अधिकार एवं ससक्तिकरण'', कुरूक्षेत्र आर्य

3. गौतम हरेन्द्र राज, ''महिला अधिकार संरक्षण'', कुरूक्षेत्र

4. भाग्यलक्ष्मी जे, (1998),''पंचायती राज एम्पावरिंग द पिपुल योजना'', जुलाई

5. मिश्रा स्वेता, (1997), ''पंचायती राज संस्थाओं मं महिलाओं की सहभागिता, ग्रामीण विकास न्यूज लेटर जुलाई

6. रानी, ए. कल्याणी (2002), इमजिंग पैटन ऑफ रूरल वुमैन लीडरशिप इन इण्डिया, कल्याण पटिलशर्स, दिल्ली

7. जन, उर्मिला (2002), पंचायतो मे निर्वाचित महिलाओ का राजनीतिक समीकरण'' राधाकमल मुकर्जी चिंतन परम्परा, जनवरी–जून पृ. 48–55

8. सिंह, दिनेश कुमार (2002) भरूरल वूमेन इकोनोमिक एण्ड पॉलिटिकल पारटिसिपेशन'' विवेकानन्द एजुकशन रिसच एण्ड डेवलपमेंट सोसायटी आगरां, वो. 1, जुलाई पृ.73–77

9. सिंहा, मधुक्षी (2002) भसर्वागीण ग्रामीण विकास में महिलाओ की भूमिका–एक सामाजिक अध्ययन कुरूक्षेत्र ग्रामीण विकास मंत्रालय, नई दिल्ली, वर्ष 47, वो. 5, मार्च पृ. 22–2